



नई दिल्ली
अंक - 142

श्री साई शके : 34
जनवरी - 2016

॥ ॐ ॥

॥ ॐ श्री साईनाथाय नमः ॥

॥ श्री सद्गुरुनाथ दादाय नमः ॥

Publisher

Sri Saikalp Adhyatm Sanstha
"Sai Niketan"
New Delhi - 110025
Ph. : 26956561
E.mail : saikalp@gmail.com
dadab6@gmail.com
Web : saishraddha-world.com

Patron

Anand Bapshet

Editorial

Vijay Kumar Varma
Jogesh Grover

Subscription

Inland
Yearly : Rs.250.00
Life time : Rs.1000.00

Overseas

Yearly : US\$ 250.00
Life time : US\$ 500.00

Printed By

Soni Printers
Cell : 09718657567

Published Every Month

©All rights reserved with Publisher

मन - विचार (बुद्धि)

संसार में आत्मा यह तत्व अविनाशी है। जीवन में आत्मा को सत्प्रवृत्ती/ सत्कर्म करने की चाहत हमेशा रहती है। लेकिन प्राप्त जन्म में सत्प्रवृत्ती से जीने के विपरीत अपने दो माध्यम प्राथमिक रूप में कार्य करते हैं, 'मन' और 'विचार'। उन दो प्रमुख माध्यमों के साथ 'आत्मा' सत्प्रवृत्ती से जीने की मूलभूत हेतु प्राप्त करने की कोशिश करती रहती है। लेकिन मन और आत्मा का साध्य होना मुश्किल होता है। जिस प्रकार पानी में सुई (Niddile) की नोक डाल दी जाए तो पानी में असंख्य तरंगे तैयार होती हैं, वैसे ही मन में कोई विकार आ गया तो उसके अनुरोध से असंख्य विचार बुद्धि में निर्माण होते हैं। इन विचारों से फिर मन को तकलीफ होती है। भाव और भावना प्रगट करना यह मन की अवस्था है और विचार प्रगट करना यह बुद्धि का काम है। मन विकसित हो गया तो विचारोपर नियंत्रण कर सकता है। 'विचार' यह क्षणिक अवस्था का विकल्प है और 'मन' यह निरंतर अवस्था का/भावना का संकल्प है। हम में से हर एक व्यक्ति सुख प्राप्त करने का प्रयत्न करता है, लेकिन जिन चीजों का लाभ हुआ तो क्या निश्चित रूप से हम सुखी हो जायेंगे, इसका विचार कोई नहीं कर रहा है। किसी व्यक्ति को अगर पूछा कि तुम्हारे सुख की व्याख्या क्या है? तो वह ऐसा जवाब देगा कि उसके सामने जो कोई (X) व्यक्ति है, उसके पास जो चीजे हैं वह अगर उसे प्राप्त हो जाती तो यह व्यक्ति सुखी होगा। लेकिन उसी समय जो (X) व्यक्ति है वह अपना सुख कोई (Y)व्यक्ति के जीवन को देखकर निश्चित करता है। उसी प्रकार, इस जगत के बहुसंख्य व्यक्ति सुख की ऐसी भ्रामक कल्पनाओं में घूमते रहते हैं।

'मन' वहीं पर है, लेकिन हर एक क्षण में 'विचार' बदल रहे हैं। आज हमारे पास Touch Screen मोबाइल नहीं तो हम दुखी हैं।

फिर वह लाकर भी क्या हम सुखी हुए? अगर ऐसा होता तो कुछ दिन के बाद उसे हम Silent पर नहीं डालते। कुछ दिन के बाद अपना मोबाइल पुराना लगने लगता है, क्योंकि 'विचार' अब बाजार में आए हुए नए मोबाइल ढूँढ़ता है। आज वक्त नहीं जा रहा है, इसलिए हम क्षणभर भी न सोचते हुए रू0 500 /— या रू0 1000 /— बाहर खाने में या मनोरंजन के साधनों में खर्च करते हैं। लेकिन तभी संसार के कुछ लोग दिन भर मेहनत करके 100 रू0 लेकर घर जाते हैं कि घरवालों का पेट तो भरे।

'विचार' क्षणभर में ऐसा झटका दे सकता है कि अपने हाथों से कोई भी बुरा काम हो जाए। तब 'विचार' की अपनी क्या स्थिति हो जायेगी, इसका कभी भी विचार नहीं किया वह (विचार) कहेगा कि "पश्चाताप करने के लिए 'मन' दिया है, मैंने मेरा काम किया, अब 'मन' ने जन्मभर पश्चाताप किया तो भी चलेगा"। हमें मन की गति अभी तक मिली नहीं है लेकिन विचारों की गति मिल गई। मन से भावना निश्चितता नहीं होती, मन से अभी तक सैंकड़ों निश्चय किए, लेकिन विचारों की वजह से कोई भी निश्चित नहीं हुआ। मन की भावना भी महत्वपूर्ण है, लेकिन मन की ताकत कम पड़ जाती है। इसलिए इसे गुरुकृपा से विकसित करना जरूरी है। मन से ईश्वर को ढूँढ़ने निकले तो विचार लंगड़ा हो जाता है और विचारों से ईश्वर को ढूँढ़ने निकले तो मन लंगड़ा हो जाता है। जीवन का यह बड़ा गणित सुलझाना हो तो सद्गुरु नमः स्मरण (ॐ श्री साईनाथय नमः) के अलावा दूसरा कोई उपाय नहीं।

ईश्वर ने हमारी बुद्धि की रचना इस प्रकार की है कि उसमें निर्माण हुआ हर एक विचार वातावरण में जाना ही चाहिए और इसलिए हमारे घर में जो संवाद होता है, वह काम काज के लिए बैठा हुआ सेवक बता सकता है। क्योंकि घर में जो विचार किया उसके स्पंदन वातावरण में निर्माण हुए और वह विचार करने वाले दिमाग में भी वह एकत्रित होते हैं। इन विचारों के स्पंदन धारण करने पर सेवक उन विचारों का विषय बता सकता है। आज तक हम जन्म लेकर आए तो पिछले जन्म के, मन पर हुए संस्कार लेकर आते हैं लेकिन पिछले जन्म के विचार नहीं लेकर आते (अगर विचार लाते तो पिछले जन्म का डॉक्टर या वकील इस जन्म में भी डॉक्टर या वकील बनता)। फिर कुछ सीखने की जरूरत ही नहीं रहती और मानवों के उद्धार के लिए प्रकृति में कोई नया संशोधन नहीं होता। मन का संस्कार साथ रहता है, इसलिए अलग-अलग व्यक्तियों के ध्येयवाद (Principles) अलग-अलग होते हैं। जन्म प्राप्त होने पर अपना पालन पोषण माँ-बाप ने किया। उन्होंने हमें सब कुछ सिखाया, बड़ा किया। शिक्षा लेने के बाद नौकरी या धंधा चालू किया। पहली तनख्वा मिलने तक सब कुछ ठीक था। इसके बाद हम हमारे से ज्यादा तनख्वा जिसकी है उसके जीवन के पीछे भागने लगे और उसके पास गाड़ी है, बड़ा मकान है, वह अपने पास नहीं, इस प्रकार के अनेक विचारों से हम दुखी हो जाते हैं। सच्चे मायने में हमें कितने पैसे मिलेंगे यह हमारे सत्कर्म पर (पिछले जन्म के) निर्भर करता है। इसलिए शिक्षा लेते समय स्कूल में जो सब से तेज होता है उसे भी साधारण छात्र से कम पैसा मिलता है। यह सोच के हमें इस जन्म में सत्कर्म करने के लिए सोचना चाहिए, लेकिन हम बार-बार (1, 2) घंटे काम करने के लिए तैयार हैं। पर सत्कर्म या दान-धर्म करने के लिए हमारे पास समय नहीं है।

हमारे विचार इस जन्म में प्राप्त हुए हैं, देहत्याग के पश्चात वे वातावरण में विलिन हो जायेंगे। मन ने गत जन्मों में बहुत कुछ सहन किया है, इसलिए यह संस्कार हुए हैं। इसलिए कोई गलत विचारों से गलत काम करते समय मन अंदर से आवाज देता है। उस मन को विकसित करने के लिए इस जन्म में हमने कितने संस्कार किए अपने जीवन का दुख दूर करने के लिए हम ईश्वर को ढूँढ़ने निकल पड़ते हैं। उपासना करने पर कभी कभी हमारे मन में यह सवाल पैदा होता है कि इतना सब करने के बाद भी घर में अशांति क्यों है? लेकिन यह अशांति हमारे घर में 'कौन' पैदा करता है। और यह अशांति किस प्रकार निकल जाए, इसका हमने कोई विचार किया है क्या? घर में पिता और औलाद की बनती नहीं, लड़के को घर से बाहर निकालने की नौबत आ जाती है और अगर लड़का सच में घर से निकल गया तो उसे ढूँढ़ने उसके माता-पिता बाहर निकलते हैं। विचारों से अविचार पैदा किया या फिर विचारों से विचार ढूँढ़ते-ढूँढ़ते एक षड़विकार जागृत हुआ। ऐसा माहौल घर में रहता है लेकिन खाने-पीने में (आहार में) घर में सबका एक ही विचार है क्योंकि सभी में वासना साधारणतः एक जैसी है। हमने कोई विचार करके अपना ख्याल प्रेमपूर्वक घरवालों के सामने रखा, तो भी परिवार के सदस्य उसकी तरफ ध्यान नहीं देते और हमें उसका पश्चाताप, दुख होता है। परिवार के सदस्यों की उम्र में और विचारों की गहराई में जो फर्क होता है, उस हिसाब से कुछ साल बाद वह ख्याल बाकी लोगों को समझ में आता है या फिर हमें, उनका

विचार समझ में आता है। उम्र के हिसाब से विचारों में फर्क होना स्वाभाविक है। लेकिन एक महत्वपूर्ण बात यह है कि परिवार के सदस्यों की उम्र में फर्क होने के बावजूद उनका मन एक ही अवस्था पर रहता है। इसलिए जब झगड़ा करना है तो मन से झगड़ा करना चाहिए, विचारों से नहीं। छोटे बच्चे झगड़ा करते हैं और पाँच-दस मिनट में वापस खेलने लगते हैं क्योंकि वे मन से झगड़ते हैं विचारों से नहीं। इसलिए बच्चे मन में बुरा क्लेश नहीं रखते। एक ही चीज का मनन (सतत विचारों) करने से मनः स्ताप (दुख) होता है। जैसे खाया हुआ खाना वापस चर्वण करते रहना यह गाय बैलों का काम है, मानवों का नहीं। इसलिए कोई एक विषय खत्म होने पर भी उसका विचार करते रहना, मानवों का नहीं इसलिए कोई एक विषय खत्म होने पर भी उसका विचार करते रहना यह हमारा धर्म नहीं है। जो गुजर गया वह गुजर गया बल्कि उसका सबक लेना है।

वं. दादाजी और प.पू. बाबा जगत कल्याण के लिए मन से इस दुनिया में रहे। और हम कई विचारों से जी रहे हैं। सिर्फ विचार प्रबल होकर उन्नति नहीं होगी हमारे जीवन में दादा बाबा का निश्चित अधिष्ठान है, क्या? यह विचार किसको करना है और कितना करना है। यह एक बार निश्चित करना चाहिए। एक बार अगर हम उनकी झोली में चले गए तो क्या अपना विचार रहना चाहिए? नहीं बिल्कुल नहीं।

हमें नौकरी – धंधा, प्रपंच-परमार्थ और खुद के बारे में विचार, यही चीजें करनी होती हैं। सभी चीजों के बारे में सभी को बताना जरूरी नहीं होता। कई चीजें अपने मन में भी रखनी जरूरी होती हैं। विचारों की एक निश्चित अवस्था तय करनी चाहिए। हमें न उस लेवल के ऊपर जाना है और ना ही नीचे जाना है। जिस प्रकार कोई विशाल नदी पर भी पानी रोकने के लिए दीवार/बांध लगतो हैं उसी प्रकार हमारे प्रपंच में दादा बाबा को स्थान देना है, जिससे हमारे सभी विचार आखिर में उनमें विलिन हो जाएं। मैं गुरु का हूँ और गुरु मेरे हैं, यह निश्चय मन में किया क्या? हम कार्य केंद्र पर आते हैं और आशीर्वाद माँगते हैं, लेकिन कौन सी चीज पर आशीर्वाद माँगना है, यह विचार हमने किया है क्या? केंद्र से जो निराकरण प्रसाद दिया जाता है, उससे गुरुशक्ति अपने घर में कार्यान्वित होने लगती है। परिवार के सदस्यों की उम्र का अंदाज लेकर गुरुशक्ति उस में सामान्य उम्र (Average Age) निकालती है, और सभी के विचारों के लेवल उस Average Age पर लाती है, जिससे घर में अशांति कम होने लगती है। विचार और मन की एकाग्रता भंग होने के लिए प्रमुख रूप से “षड्विकार” का मायने यह है कि मुझमें ऐसी कुछ चीजें हैं जो जरूरत से थोड़ी भी ज्यादा हो गई तो मैं दूसरों को सुख-समाधान नहीं दे सकता वह चीजें मतलब “षड्विकार”। जैसे मन का संशोधन आज तक कोई कर नहीं पाया वैसे “षड्विकार” का भी संशोधन नहीं हुआ है। देवदैविक मार्ग में अनेक किताबों में कहा है, कि इन षड्विकार का नाश करके ही उन्नति होगी। लेकिन इनका नाश कैसे करें, यह किसी ने नहीं बताया हर एक व्यक्ति में ये षड्विकार रहे ही हैं, बस यही फर्क है। विकार नहीं हो ऐसा मनुष्य मिलना नामुमकिन है। तो सवाल यह है कि इन विकारों पर हम विजय प्राप्त कर सकते हैं क्या? विकारों का हम पर क्या परिणाम होता है? सच्चे माईने में विकारों का होना पूरी तरह नैसर्गिक है। अनेक साधकों ने विविध साधना करके षड्विकारों पर विजय प्राप्त करने का प्रयास किया। लेकिन वे यशस्वी नहीं हुए। वास्तविक स्वरूप में उन्हें जीतना नहीं है, बल्कि उन्हें limit में रखकर उनपर control करना जरूरी है। षड्विकारों से ही जीवन में एक प्रकार का मजा है। मकसद के बिना प्रेम का अनुभव लेना मुश्किल है, और लोभ नहीं होगा तो परोपकार भी नहीं होगा। जीवन में षड्विकार होने ही चाहिए, लेकिन वह एक limit में होने चाहिए और यह कार्य सद्गुरु के अलावा कोई भी अन्य व्यक्ति नहीं कर सकता। इसलिए उपासना, नामःस्मरण, (ॐकार साधना) करना आवश्यक है। इसकी वजह से मन की और विचारों की एकाग्रता होती है और हम सन्मार्ग का अनुसरण कर सकते हैं। उसी प्रकार मन की और विचारों को सद्गुरु नियंत्रण में ले आते हैं और उसी समय भक्त सद्गुरु के सानिध्य में जाने लगता है। लेकिन अभी तक हमारे जीवन में कोई भी निश्चित भूमिका न होने की वजह से गुरु के सानिध्य में जाकर भी हमारी प्रगति नहीं होती है। सुबह उठने से शाम के सोने तक हमारी दिनचर्या निश्चित है क्या? हमारे खुद का जीवन निश्चित नहीं है तो फिर ऐसे जीवन में सुख है यह, हम निश्चित रूप से कैसे कह सकते हैं।

हम विचारों से सुख निर्माण करने का प्रयत्न करते हैं। विचारों से को ढूँढ़ने जाते हैं, लेकिन सच्चे माईने में हासिल कुछ भी नहीं होता। क्योंकि विचारों से विचारों को ढूँढ़ने गए तो षड्विकार कार्य करने लगते हैं और उससे मन निर्बल बनते हैं। इसलिए आहार निश्चित होना आवश्यक है। अगर आहार निश्चित नहीं होगा तो

विचार भी निश्चित नहीं हो सकते। जब तक मन विकसित होकर कार्य नहीं करता तब तक करोड़ रुपये मिले तो भी समाधान नहीं मिलेगा। इसलिए मन निर्बल नहीं होना चाहिए। मन को सभी तरह का ज्ञान होता है। उसे उत्पत्ति, स्थिति, लय ये तीन अवस्थाओं का पता है। देह विसर्जन के बाद विचारों का विसर्जन करके, मन नया देह धारण करता है। उसकी (मन की) जीवन के तरफ देखने की दृष्टि ध्येय वादी होनी चाहिए। लेकिन सद्गुरु कृपा के बगैर वह खुद को ढूँढ नहीं सकते और खुद को ढूँढे बिना, दूसरे व्यक्ति में क्या अच्छा है, यह नहीं समझ सकते। यह कार्य मन करता है, और दूसरे में क्या बुराई है, यह अपने विचार ढूँढते हैं। जब संस्कारी जीवन अविचारी बनता है, तब मन का कार्य रूक जाता है और विचारों का कार्य शुरू होता है। विचारों की अवस्था अस्थिर होती है, इसलिए विचार कोई भी अच्छी बात पर भी कायम नहीं रहते। इसी कारण सालों भक्ति करने के बाद भी कुछ व्यक्ति ईश्वर के प्रति या गुरु के प्रति अविश्वास/विकल्प निर्माण करते हैं। वास्तविक रूप से यह विकल्प उनके विचारों में आता है और खुद के मन का विकास न होने की वजह से वे विकल्प उनके विचारों में आता है और खुद के मन का विकास न होने की वजह से वे गुरुमार्ग से वंचित हो जाते हैं। वं. दादाजी कहते हैं कि यह सब पता होने के कारण ये चीजें हमारे लिए मायने नहीं रखती। हमने आपके मनको स्वीकार किया है न कि आपकी बुद्धि को या विचारों को। आपके मन की और हमारी पुरानी जान पहचान है और वह आगे भी जनम – जनम तक रहेगी। इससे आपके ध्यान में आयेगा कि हमारी मुलाकात आपके विचारों के समर्थन के लिए नहीं बल्कि आपके मन के लिए है और इसलिए इस अनिश्चित जीवन की कई चीजें मन स्वीकार करता है, लेकिन विचार नहीं करते। “मन सर्वव्यापी होता है।” पशु-पक्षी, जानवर और मानवों में एक ही प्रकार का मन होता है सिर्फ उसकी विकसित अवस्था बदलती रहती है। मन का कार्य यह चैतन्य का कार्य है लेकिन अविचारों की वजह से वह कार्य दिखाई नहीं देता। इसलिए जीवन में सद्गुरुकृपा होनी चाहिए। दादा –बाबा की हमारी ऊपर दृष्टि है, तो हमारे लिए सृष्टि बदल जायेगी, लेकिन उसके लिए प्रथमतः अपनी दृष्टि साफ होनी आवश्यक है। आहार और आचार अगर निश्चित न हो तो विचार निश्चित नहीं होंगे। आहार की शुद्धता पर विचारों का स्वरूप निर्धारित होता है। आहार, आचार और विचार निश्चित रखकर मन पर संस्कार बनाना है। यही काम साधना सम्मेलन में होता है। इस प्रकार का संस्कार जन्म – जन्म तक साथ रहता है और इसका विकास होने के लिए अपना आहार और विचारों पर निश्चय आज आवश्यक है। यही निश्चितता का लाभ प्राप्त होने के लिए श्री गुरु हमें शक्ति प्रदान करें यही वं. दादा और प.पू. बाबा के चरणों में प्रार्थना।

॥ शुभं भवतु ॥

विनम्र निवेदन

अति हर्ष के साथ आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों को सूचित किया जाता है कि मासिक पत्रिका “तत्व बोध” का आगामी अंक एवं अन्य सूचना वेबसाइट पर एवं मेल द्वारा प्रेषित की जाएगी। अतः आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों से अनुरोध है कि आप सभी अपना ई-मेल पता एवं अन्य जानकारी यथाशिघ्र निम्न पते पर प्रेषित करें :

Sri Saikalp Adhyatm Sanstha

“Sai Niketan”

5, Jasola Vihar, New Delhi - 110025 Telephone : 26956561

E-mail : saikalp@gmail.com, dadab6@gmail.com

Please send your yearly subscriptions as early as possible